

**Q. India-Bangladesh relations are often considered a cornerstone of India's Act East Policy. Analyze the current challenges and opportunities in bilateral ties.**

India-Bangladesh relations play a pivotal role in advancing India's Act East Policy, which aims to enhance regional connectivity, trade, and strategic ties with Southeast Asia. Given Bangladesh's geographic location at the crossroads of South Asia and Southeast Asia, its cooperation is vital for India's broader regional ambitions.

### **Challenges in India-Bangladesh Relations-**

1. **Political Instability:** Sheikh Hasina's ousting and the rise of Islamist factions threaten Bangladesh's secular fabric and minority rights, raising regional security concerns.
2. **Illegal Migration:** Political turmoil may intensify cross-border migration, creating socio-economic pressures in India's border states.
3. **Rohingya Refugee Crisis:** Bangladesh hosts over a million Rohingya refugees, and India's limited support in addressing the humanitarian crisis has led to friction between nations.
4. **Insurgency Risks:** Northeastern insurgent groups like ULFA may exploit Bangladesh's instability for safe havens, complicating India's internal security.
5. **Chinese Influence:** Growing Chinese investments in Bangladesh, particularly through the Belt and Road Initiative (BRI) and projects like the Chittagong Port, challenge India's regional strategic interests.
6. **Water Disputes:** Unresolved issues like the Teesta River water-sharing dispute and Farakka barrage concerns strain bilateral ties.
7. **Economic Disruptions:** Political uncertainty could delay India-supported projects, hampering trade and connectivity initiatives.

### **Opportunities:**

1. **Stabilizing Role:** India can support democratic governance and inclusive policies to promote stability in Bangladesh.
2. **Enhanced Connectivity:** Strengthening projects like Maitree Express, Agartala-Akhaura rail link, and inland waterways boosts regional integration.
3. **Strategic Partnerships:** Countering China's influence through timely completion of initiatives like the Friendship Pipeline and fostering trust with Bangladesh.
4. **Economic Cooperation:** Negotiating the Comprehensive Economic Partnership Agreement (CEPA) and expanding bilateral trade strengthen economic ties.
5. **Cultural Collaboration:** Reinforcing cultural links, including through programs by the Indira Gandhi Cultural Centre (IGCC), can help counter extremist ideologies and support Bangladesh's secular traditions.
6. **Regional Coordination:** Leveraging platforms like SAARC and BIMSTEC to address shared issues like climate change and disaster resilience.

India-Bangladesh relations are at a crossroads. While current challenges, such as political instability and rising Islamist influence, demand immediate attention, there are ample opportunities to strengthen bilateral ties. By addressing shared concerns pragmatically and deepening cooperation in areas like trade, security, and connectivity, India can ensure that its relationship with Bangladesh continues to be a cornerstone of its Act East Policy.

**प्रश्न:** भारत-बांग्लादेश संबंधों को अक्सर भारत की एक्ट ईस्ट नीति का आधार माना जाता है। द्विपक्षीय संबंधों में मौजूदा चुनौतियों और अवसरों का विश्लेषण करें।

भारत-बांग्लादेश संबंध भारत की एक्ट ईस्ट नीति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिसका उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ क्षेत्रीय संपर्क, व्यापार और रणनीतिक संबंधों को बढ़ाना है। दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के के संदर्भ में बांग्लादेश की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए, इसका सहयोग भारत की व्यापक क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है।

### भारत-बांग्लादेश संबंधों में चुनौतियाँ-

1. **राजनीतिक अस्थिरता:** शेख हसीना को सत्ता से बेदखल किए जाने और इस्लामवादी गुटों के उदय से बांग्लादेश के धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने और अल्पसंख्यक अधिकारों को खतरा है, जिससे क्षेत्रीय सुरक्षा संबंधी चिंताएँ बढ़ रही हैं।
2. **अवैध प्रवास:** राजनीतिक उथल-पुथल से सीमा पार प्रवास में तेज़ी आ सकती है, जिससे भारत के सीमावर्ती राज्यों में सामाजिक-आर्थिक दबाव उत्पन्न हो सकता है।
3. **रोहिंग्या शरणार्थी संकट:** बांग्लादेश में दस लाख से ज़्यादा रोहिंग्या शरणार्थी हैं और मानवीय संकट से निपटने में भारत के सीमित समर्थन के कारण दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ रहा है।
4. **उग्रवाद का जोखिम:** ULFA जैसे भारत के पूर्वोत्तर उग्रवादी समूह सुरक्षित ठिकानों के तौर पर बांग्लादेश की अस्थिरता का फ़ायदा उठा सकते हैं, जिससे भारत की आंतरिक सुरक्षा अधिक जटिल बन सकती है।
5. **चीनी प्रभाव:** बांग्लादेश में बढ़ते चीनी निवेश, खास तौर पर बेल्ट एंड रोड पहल (BRI) और चटगाँव बंदरगाह जैसी परियोजनाओं के ज़रिए, भारत के क्षेत्रीय रणनीतिक हितों को चुनौती दे रहे हैं।
6. **जल विवाद:** तीस्ता नदी जल-बंटवारा विवाद और फरक्का बैराज संबंधी चिंताओं जैसे अनसुलझे मुद्दे द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित करते हैं।
7. **आर्थिक व्यवधान:** राजनीतिक अनिश्चितता भारत समर्थित परियोजनाओं में देरी कर सकती है, जिससे व्यापार और कनेक्टिविटी पहल में बाधा आ सकती है।

### अवसर:

1. **स्थिरीकरण की भूमिका:** बांग्लादेश में स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए, भारत लोकतांत्रिक शासन और समावेशी नीतियों का समर्थन कर सकता है।
2. **बेहतर कनेक्टिविटी:** मैत्री एक्सप्रेस, अगरतला-अखौरा रेल लिंक और अंतर्देशीय जलमार्ग जैसी परियोजनाओं को मजबूत करना क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देता है।
3. **रणनीतिक साझेदारी:** भारत- बांग्लादेश मैत्री पाइपलाइन जैसी पहलों को समय पर पूरा करके और बांग्लादेश के साथ विश्वास को बढ़ावा देकर, भारत चीन के प्रभाव को कम कर सकता है।
4. **आर्थिक सहयोग:** व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (सीईपीए) पर बातचीत करने से और द्विपक्षीय व्यापार का विस्तार करने से आर्थिक संबंधों को मजबूत कर सकते हैं।
5. **सांस्कृतिक सहयोग:** इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र (आईजीसीसी) के कार्यक्रमों के माध्यम से सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना चाहिए। इससे चरमपंथी विचारधाराओं का मुकाबला करने और बांग्लादेश की धर्मनिरपेक्ष परंपराओं का समर्थन करने में मदद मिल सकती है।
6. **क्षेत्रीय समन्वय:** जलवायु परिवर्तन और आपदा प्रबंधन जैसे साझा मुद्दों को संबोधित करने के लिए सार्क और बिम्स्टेक जैसे मंचों का उपयोग करना चाहिए।

भारत के लिए बांग्लादेश अत्यंत महत्वपूर्ण है। जबकि राजनीतिक अस्थिरता और बढ़ते इस्लामवादी प्रभाव जैसी मौजूदा चुनौतियों पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है, द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए पर्याप्त अवसर मौजूद हैं। साझा चिंताओं को व्यावहारिक रूप से संबोधित करके और व्यापार, सुरक्षा और कनेक्टिविटी जैसे क्षेत्रों में सहयोग को गहरा करके, भारत यह सुनिश्चित कर सकता है कि बांग्लादेश के साथ उसके संबंध उसकी एक्ट ईस्ट नीति का आधार बने रहें।